तन्त्र ग्रन्थमाला नं0 24

कङ्कालमालिनीतन्त्रम्

(मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादक एवं हिन्दी अनुवाद

प्रदीप कुमार राय

प्राच्य प्रकाशन

वाराणसी-221002

भूमिका

भगवती काली ही कङ्कालमालिनी हैं। कङ्कालमालिनी का अर्थ 'मुण्डमालिनी काली' हैं। इस ग्रन्थ के आद्यन्त पाठ करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि 'कङ्काल' शब्द के द्वारा 'वर्ण' अभिप्रेत हैं एवं कङ्कालमाला का अर्थ 'वर्णमाला' है, जिनके गले में वर्णमाला शोभायमान हैं, वही 'कङ्कालमालिनी' मूलाधार निवासनी कुण्डलिनी देवी हैं, जो परम सुख को प्रदान करतीं हैं तथा जो श्मशानवासिनी श्यामा जाग्रता कुण्डलिनी सुषुम्ना पथ के द्वारा भ्रमण करती हैं।

पुस्तक के प्रथम पटल में वर्णमाला की व्याख्या की गयी है। इसलिए इस तन्त्र में 'वर्णमाला' का एक विशेष स्थान है। 'अ' से 'अः' सोलह स्वरवर्ण हैं, जिसे सत्त्वमय बताया गया है। अवशिष्ट 35 व्यञ्जनवर्णों में 'क' से 'थ' कुल 17 वर्ण को रजोगुणमय बताया गया है, तथा 'द' से 'क्ष' तक कुल 18 वर्ण समष्टि को तमोगुणमय माना गया है। सभी इक्यावन (51) वर्णमाला की एक तालिका भी दी गयी है।

द्वितीय पटल में मन्त्रों का अर्थ,मन्त्र चैतन्य योनिमुद्रा का विवरण, मन्त्र सिद्धि के लिए योनिमुद्रा का रहस्य तथा योनि कवच का विवरण दिया गया है।

तृतीय पटल में गुरु की पूजा-विधि, गुरु कवच एवं गुरुगीता का कथन कहा गया है।

चतुर्थ पटल में महाकाली के मन्त्रों का महात्म्य का वर्णन किये जाने के पश्चात् एकाक्षर तथा त्र्यक्षर मन्त्रों का उद्धार किया गया है, और अन्त में महाकाली की पूजा-विधि का कथन किया गया है।

पञ्चम पटल का दीर्घ काफी विस्तार में है। इसमें पुरश्चरण का विधान एवं उसके माहात्म्य का वर्णन किया गया है। पुरश्चरण-विधि के प्रसङ्ग में ही प्रातःकृत्य स्नान, संध्या, तर्पण, प्रभृति का उल्लेख किया गया है। गणपति, भैरव, क्षेत्रपाल

एवं इन्द्रादि देवताओं के उद्देश्य से किस प्रकार बलि प्रदान करना चाहिए, उसका विस्तार से वर्णन किया गया है। भूतशुद्धि-न्यास के अनुष्ठान के समापन, भस्म का तिलक धारण, रुद्राक्ष-धारण का विधान एवं माहात्म्य विस्तार के साथ वर्णित किया गया है। 50 वर्णों में प्रत्येक वर्ण की पूजा, ध्यान, धारण प्रभृति का उल्लेख किये जाने के बाद डाकिनी, राकिणी, लाकिनी, काकिनी, शाकिनी एवं हाकिनी के बीज मन्त्रों का उद्धार एवं मातृका बीज के रहस्य तथा शारदीया महापूजा तत्सम्बन्धी पुरश्चरण का विवरण विशेष उपयोगी है।

यदि यह ग्रन्थ साधकों एवं तन्त्रजिज्ञासुओं के लिए उपयोगी बन सके तो अपने परिश्रम को सार्थक समझेंगे।

प्रदीप कुमार राय

सूचीपत्र